

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की चुनौतियां

स्नेहलता(शोधार्थी), डॉ.सीताराम पाल, डॉ.शकुन्तला मिश्रा

मनुष्य एक बुद्धिजीवी प्राणी है जब से मानव सभ्यता का सूर्य उदय हुआ उसी समय से मनुष्य के अंदर ज्ञान, आचरण, कौशल, मानसिक तथा नैतिकता का विकास शुरू हो गया। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने अंदर निहित क्षमताओं, योग्यताओं के अनुरूप व्यक्तित्व का विकास करता है और पूर्ण रूप से प्रभावशाली एवं समाज में अपने क्रिया कलापों को सुचारु रूप से आदान-प्रदान करता है, और कहा जाता है कि शिक्षा समानता और सशक्तीकरण की प्रक्रिया का मूल है। शिक्षा विशेष विद्यालय में हो या सामान्य विद्यालय में हो यदि शिक्षा की प्रक्रिया में किसी प्रकार का अवरोध उत्पन्न होता है तो बालक (व्यक्ति) को शिक्षा ग्रहण करने में विभिन्न प्रकार की चुनौतियों (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक) का सामना करना पड़ता है ऐसा कहा जाता है कि शिक्षा ज्ञान जितने अधिक इंद्रियों के माध्यम से प्राप्त किया जाता है ज्ञान उतना ही सार्थक व स्थाई होता है इसलिए इंद्रियों को ज्ञान का द्वार कहा जाता है जब किसी बालक या व्यक्ति की एक या एक से अधिक इंद्रियां प्रभावित

*स्नेह लता(शोधार्थी)

विशेष शिक्षा संकाय

डॉ.सीताराम पाल

(सहायक आचार्य)विशेष शिक्षा संकाय

डॉ.शकुन्तला मिश्रा

राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय लखनऊ उ. प्र. होती हैं तो उसे शिक्षा ग्रहण करने संप्रेषण करने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में समस्या उत्पन्न होती है। ऐसे बालक या व्यक्ति को विशेष बालक की संज्ञा दी जाती है।

यदि किसी घर परिवार में दृष्टिबाधित बालक जन्म लेता है तो उसके लिए शिक्षा ग्रहण करना बहुत ही चुनौतीपूर्ण कार्य हो जाता है बच्चे को अपने आस-पास के वातावरण को समझने में भी बहुत सी चुनौतियों का सामना करना पड़ता है यदि बच्चा स्कूल जाता है तो एक इंद्रिय अनुपलब्ध होने के कारण शिक्षा सही ढंग से नहीं कर पाता है यदि बच्चे का प्रवेश एक विशेष विद्यालय में हुआ है तो वहां पर एक विशेष शिक्षक होने से उस बच्चे को उसकी क्षमता और योग्यता के अनुसार उसको काफी हद तक बहुत कुछ सिखाया व पढ़ाया जा सकता है जब यही बालक यदि एक सामान्य विद्यालय या समावेशी विद्यालय में प्रवेश

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

करता है या प्रवेश दिलाया जाता है तो ऐसी स्थिति में उस बच्चे को आस-पास के वातावरण से लेकर शिक्षक, सहपाठी या उपकरण सभी प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

उद्देश्य (Objective)

- समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों की चुनौतियों का अध्ययन करना ।
- समावेशी शिक्षा में दृष्टिबाधित विद्यार्थियों को संसाधनों की उपलब्धता एवं उनके उपयोग संबंधी चुनौतियों का अध्ययन करना ।
- समावेशी शिक्षा में विशेष शिक्षकों को आने वाले चुनौतियों का अध्ययन करना।

शोध विधि (Research Methods)

इस अध्ययन में अनुसंधानकर्ता ने क्रॉस सेक्शनल सर्वेक्षण डिजाइन के द्वारा समावेशी स्कूल के 10 सामान्य (गैर दृष्टिबाधित), 10 दृष्टिबाधित छात्रों और 10 स्कूल के शिक्षकों को इस अध्ययन में यादृच्छिक रूप से शामिल किया गया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

- **हौगन (1987)** ने एक अध्ययन में पाया कि उच्च शिक्षा संस्थान में दृष्टिबाधित लोगों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं, सेवाओं की अनुपस्थिति, कुछ गैर-ब्रेल मुद्रित पुस्तकों, दृश्य पाठकों की कमी, विश्वविद्यालय के जीवन को समायोजित करने में कठिनाई और दृष्टिबाधित छात्रों की विशेष आवश्यकताओं की उपेक्षा करने वाले शिक्षकों के रूप में विभिन्न समस्याओं का संकेत दिया।
- **यूनेस्को ने(1994)**में विशेष शिक्षा विषय पर एक पत्र जारी किया इस पत्र में यह देखा गया कि नेत्रहीन और आंशिक रूप से कम देखने वाले बच्चों को देखने सहपाठियों कि तुलना में एक साधारण स्कूल में सीखने, संवाद करने, और बात-चीत करने(Learning, Communication and Talking)में अधिक समस्या होती है इसका कारण यह है कि बच्चों को उनके पूर्व-विद्यालय के वर्षों के दौरान पर्याप्त शैक्षिक और विकासात्मक सहायता नहीं मिल पायी है और न ही उनके माता-पिता, कक्षा शिक्षक उन्हें स्कूल के समय में आवश्यक सहायता उपलब्ध करा पाते हैं।
- **केलर (1999)** जिन्होंने “शैक्षिक वातावरण में विकलांगों द्वारा सामना की जाने वाली कठिनाइयां” विषय पर एक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली कई समस्याएं थीं जैसे कि परिवहन की कमी और अपने साथियों के साथ सामाजिक संबंध विकसित करना।
- **इब्राहिम(2001)**ने जॉर्डन विश्वविद्यालय में दृष्टिबाधित छात्रों की समस्याओं का अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों ने पुस्तकालय का उपयोग, परिवहन, शिक्षकों की अपनी

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

आवश्यकताओं के बारे में समझने में कठिनाइयों जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन्होंने आगे कहा कि यह कई कारण है जिसमें विशेष आवश्यकता वाले बालकों और नियमित छात्रों के बीच बातचीत की कमी शामिल है, शिक्षकों के पास समावेशी कार्यक्रम को संभालने के लिए आवश्यक शिक्षण तकनीकों में पर्याप्त कौशल नहीं है। इसलिए, समावेशी कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित करने के लिए, इसके लिए एक नियमित कक्षा की आवश्यकता होती है जो संवेदनशील हो और छात्रों की जरूरतों और क्षमताओं को ध्यान में रखे।

- **Wandera Roberts Otyola, Grace MillyKibanja(2017)** ने “मेकरेरे और क्यंबोगो विश्वविद्यालयों में दृष्टिबाधित छात्रों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियाँ” पर एक अध्ययन किया और पाया कि छात्रों को विश्वविद्यालय के वातावरण के आसपास कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जिनका वे व्याख्यान, पहुंच दैनिक जीवन कौशल और सामाजिक रूप से सामना करते हैं जो अंततः उनकी शैक्षणिक उपलब्धियों को प्रभावित करते हैं जैसे ब्रेल मशीनों की कमी, ब्रेल रूप में पाठ्यपुस्तकें और स्लेट। सामाजिक रूप से उन्हें कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कि उनके साथी छात्रों और व्याख्याताओं द्वारा गैर-प्राप्तकर्ता के रूप में देखा जाना और इसलिए इन लोगों द्वारा अलग-थलग पड़ना। कुछ साथी छात्रों का उनके प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण है जिससे उन्हें कोई सहायता या सहायता प्रदान करना मुश्किल हो जाता है।

निष्कर्ष Conclusion

आज के वर्तमान समय में यह देखा जाता है कि एक सामान्य स्कूल में शिक्षक तो उपलब्ध कराए जा रहे हैं परंतु कहीं ना कहीं वह उस बच्चे को या (विभिन्न प्रकार की दिव्यांगता से ग्रसित) बच्चों के अनुरूप एक ही शिक्षक रखे जाते हैं यह कहीं ना कहीं एक बहुत ही बड़ा चुनौती है क्योंकि एक शिक्षक जो उसका Specialization Visual Impairment है तो उस शिक्षक के लिए भी एक चुनौती भरा कार्य हो जाता है कि वह उस बच्चे को (बौद्धिक अक्षमता, श्रवणबाधित, स्वलीन आदि बच्चा है) इस बच्चे को वह किस तरह से पढ़ाये और वह किस विधि से पढ़ाये यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य है क्योंकि उसके अनुरूप उसके पास विद्यार्थी नहीं है और न ही विद्यार्थी के अनुरूप शिक्षक नहीं है जिसकी वजह से उसके शिक्षा का आदान-प्रदान करने में अवरोध उत्पन्न हो रहा है और साथ ही साथ वहां के उस स्कूल के (Resources) संसाधन जो है वह भी उसके लिए कहीं ना कहीं एक बाधा उत्पन्न करते हैं मान लो वहां का (Infrastructure) इंफ्रास्ट्रक्चर, बिल्डिंग, रैंप, कॉरिडोर (Corridor) इत्यादि भी प्रभावित करता है और उसके क्लास के बच्चे भी उस दिव्यांगता से अवेयर नहीं

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

हैं जिसकी वजह से वह बच्चे भी उस दिव्यांग बच्चे से अलग रहते हैं या कटे कटे से रहते हैं जिसकी वजह से उस बच्चे को सम्प्रेषण (Communication) में समस्या होती है या शिक्षा ग्रहण करने में समस्या होती है

सुझाव

यदि समय रहते हुए सरकारी व गैरसरकारी विद्यालयों की स्थिति को नहीं सुधारा गया तो आने वाले समय में शिक्षा की स्थिति और दयनीय हो जायेगी जिससे सामाजिक असंतोष को बढ़ावा मिलेगा जो आने वाले भारत के भविष्य को अंधकार में होने से नहीं बचा सकता है। इसके संदर्भ में कुछ सुझाव हैं जो सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

- बच्चे के भविष्य को देखते हुए सभी विद्यालयों (सरकारी व गैरसरकारी) में विशेष शिक्षक नियुक्त किए जाए जिससे उनका भी समाज में भागीदारीता सुनिश्चित हो सके।
- जिस प्रकार से अन्य विषयों के शिक्षक (हिन्दी, गणित, अंग्रेजी आदि) को अनिवार्य रूप से नियुक्त किए हैं उसी प्रकार से विशेष शिक्षक को भी प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक नियुक्त किए जाए ।
- राष्ट्रीय नई शिक्षा नीति (2020) को ईमानदारी पूर्वक लागू किया जाए ।
- विद्यालय में समय-समय पर दिव्यांगता से संबंधित जागरूकता कार्यक्रम किया जाए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. लाल, रमन बिहारी (2011). *भारतीय शिक्षा का इतिहास विकास एवं समस्याएं*. मेरठ उ.प्र.: आर लाल बुक डिपो
2. ओढ़, लक्ष्मीकांत (2014) *शिक्षा के दार्शनिक पृष्ठभूमि* जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी ।
3. सिंह, मदन (2014) *समावेशी शिक्षा*. मेरठ आर लाल बुक डिपो । :
4. सिंह, अरुण कुमार (2006). *मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ*. दिल्ली: मोतीलाल बनारसीदास
5. सिंह, शिखा (2015). *समावेशी विद्यालय में दृष्टिबाधित छात्रों को सहपाठी के सहयोग का अध्ययन*. लखनऊ: डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्व विद्यालय।
6. सिंह, सुधीर कुमार (2011) *विशिष्ट विद्यालय के वातावरण का दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के समायोजन के प्रभाव का अध्ययन*. लखनऊ: डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्व विद्यालय।
7. Keller, G., Warrack. B. & Bartel, H. (1999). *Statistics*. California: Duxbury Press.

Saarth

E-Journal of Research

ISSN NO: 2395-339X

8. UNESCO (1994). The Salamanca Statement and framework for action on Special Needs Education adopted by the World.
9. Wandera Roberts Otyola, Grace MillyKibanja(2017). *Challenges Faced by Visually Impaired Students*, Makerere Journal of Higher Education Kyambogo Universities.